ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 95-97

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

"हिन्दी काव्य साहित्य का अमर युग–छायावाद"

मुकेश कुमार मिश्र
1444/24 मधुरकुजं सिविल लाइन, गॉधी नगर बस्ती (उ0प्र0), भारत

Received- 06.08.2020, Revised- 09.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: - mishramukesh602@gmail.com

सारांश : ***छायावाद हिन्दी साहित्य के काल खण्ड का वह युग है जिसमें केवल स्वतन्त्रता की हुकार ही नही भरी, बल्कि साहित्य की सभी विधाओं का व्यवस्थित एवं क्रमिक विकास हुआ, प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी ने अपनी रचानाओं के द्वारा सम्पूर्ण छायावाद को अमरत्व प्रदान किया। वैसे देखा जाये तो छायावाद के आरम्भ काल को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद है, कुछ विद्वान मुकुटधर पाण्डेय तथा मैथलीशरण गुप्त को छायावाद के प्रवर्तक के रूप मे स्वीकार करते है, जबकि कुछ विद्वान 'प्रसाद' द्वारा संचालित 'इन्दु' पत्रिका को छायावाद का आरम्भ काल मानते है, किन्तु ऐतिहासिक एवं अनुसंधानत्मक दृष्टि से देखा जाये तो 'जयशंकार प्रसाद' की 'झरना' संग्रह से छायावाद का प्रारम्भ मान सकते है।***

कुंजीभूत शब्द–छायावाद, हिन्दी साहित्य, स्वतन्त्रता, विधाओं, व्यवस्थित, क्रमिक विकास, रचानाओं, सम्पूर्ण ।

छायावाद को आधुनिक हिन्दी काव्य खण्ड का स्वर्ण काल कहा जाये तो ज्यादा न्याय संगत होगा। प्रथम विश्व युद्ध की विभिशिका से लेकर विश्व–मानवता और विश्व शान्ति के विचारों का सम्पूर्ण प्रभाव इस (छायावाद) के लेखकों की रचनाओं में देखा जा सकता है, टैगोर से लेकर महात्मा गाँधी तक के सम्पूर्ण विचारों का पुंज है–छायावाद! इतना ही नही, पश्चिम के बायरन, कीट्स, शैली, वडसवर्थ के काव्य रूप को भी छायावादी कवियों ने खूब अपनी काव्य रचनाओं में व्यंजित किया है।

यदि हम भारतीय चिंतन दृष्टि से विचार करें, तो हिन्दी काव्य साहित्य में छायावादी परम्परा का प्रवर्तन, द्विवेदी युगीन इतिवृतात्मकता एवं आदर्शवादी सिद्धांतों के विरोध के रूप में हुआ। छायावाद की काल–सीमा प्रमुख रूप से 1918–1936 ई0 के रूप में इतिहास में वर्णित है। कल्पना की प्रचुरता, प्रतीकात्मकता, प्रकृति चित्रण, व्यक्तिवादी चेतना तथा अनंत अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रेम आदि कई प्रवृत्तियाँ छायावाद का मुख्य आधार बनकर हिन्दी काव्य साहित्य के इतिहास मं रेखांकित हुई।

सर्वप्रथम जबलपुर से प्रकाशित श्रीशारदा और सरस्वती 'पत्रिका' में श्री मुकुटधर पाण्डेय और श्री सुशील कुमार ने 'हिन्दी में छायावाद' नाम से एक लेख लिखा, जो बाद में 'छायावाद' काव्य नामकरण के रूप में स्वीकार किया गया।

प्रख्यात समीक्षक आलोचक डॉ0 नगेन्द्र छायावाद की व्याख्या करते हुए लिखते है– "युग की उदबुद्ध चेतना ने ब्राह्म अभिव्यक्ति से निराश होकर जो आत्मवह अंतर्मुखी साधना आरम्भ की वही काव्य में छायावाद है," जबकि प्राख्यात मार्क्सवादी आलोचक प्रो0 नामवर सिंह छायावाद के सम्बन्ध में अपना एक अलग तथा तथ्यपूर्ण विश्लेशण प्रस्तुत करते है उनका मानना है, "छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है, जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से। इस जागरण में जिस तरह क्रमशः विकास होता गया, इसकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी विकसित होती गई और इसके अन्य स्वरूप छायावाद संज्ञा का भी अर्थ विस्तार होता गया।"

छायावाद में ही स्त्री और पुरूष के सम्बन्ध को लेकर कवि प्रसाद ने कामायनी जैसी कालजयी रचना की साथ ही साथ आज के समय में नारी विमर्श का प्रश्न जो समाज के मुख्य धारा का विषय बनकर, अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर चर्चित हो रहा है, इसके मूल में कही–न–कही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से छायावाद का प्रभाव देखा जा सकता है। छायावाद के कवियों एवं लेखकों ने समयानुसार इसकी पड़ताल कर ली थी। छायावाद के प्रवर्तक कवि, नाटक, सम्राट, 'जयशंकर प्रसाद' तथा महाकवि निराला ने अपने काव्य रचना संसार में इसे बड़े पैमाने पर रेखांकित किया। 'कवि प्रसाद' लिखते है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो/विश्वास रजत नग पग तल में! पीयूष स्रोत सी बहा करो/जीवन के सुन्दर समतल में! नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अध खुला अंग खिला हो, ज्यों बिजली का फूल, मेघ वन बीज गुलाबी रगं

यद्यपि पन्त जी को प्रकृति चित्रण का ब्रह्म रूपी कवि माना जाता है, किन्तु नारी के भावात्मक सौंदर्य में

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

उनकी दृष्टि अत्यन्त पारखी है। 'पल्लव' की कुछ पंक्तिया इसकी साक्ष्य है–

एक वीणा की मृदुझंकार।
कहा है, सुन्दरता का पार।
तुम्हें किस दर्पण में सुकुमारी?
तुम्हारे छूने में था प्राण
संग में पावन गंगा–स्नान
तुम्हारी वाणी में कल्याणी
त्रिवेणी की लहरों का गान।"

भाषा सन्दर्भ को लेकर छायावादी कवियों का अपना–अपना एक अलग दृष्टिकोण रहा, किन्तु प्रकृति के कवि पन्त की काव्य भाषा अन्य छायावादी कवियों में बिल्कुल अलग थी, भावानुकूल शब्दों के चयन में वह पूर्णतः सिद्ध थे, इसी कारण उन्हें छायावाद का शब्द शिल्पी कहा जाता है– उनकी कविता "नौका बिहार" की कुछ पंक्तियाँ इनके इस रूप की स्पष्ट व्याख्या करती है–

शान्त स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्वल
अपलक अनंत नीरव भूतल
सैकत शय्या पर दुग्ध धवल
तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म–विरल
लेटी है शांत, क्लांत, निरचल"

सम्पूर्ण छायावाद, आत्मीयता, प्रकृति प्रेम, सौन्दर्य भावना, संवदेनाशीलता, अथक जिज्ञासाा की लालसा, संघर्ष करने की अनवरत प्रेरणा का स्थायी संदेश है। छायावाद हमें रसमग्न करके निश्क्रिय नहीं बनाता, बल्कि, उद्बुद्ध करके सक्रिय बनाता है वह हमारी भावनाओं को व्यापक, अनुभूति को गहरी और भावों को परिश्कृत तथा परवर्तित करता है।

छायावाद की युगीन प्रवृत्तियों पर विचार करने पर पता चलता है कि छायावाद की प्रवृत्तियों ने कविता के क्षेत्र में जो प्रतिमान गढ़े है, उसी से काव्य की नई प्रवृत्तियों का जन्म हुआ, एक प्रकार से देखा जाये, तो कविता की वर्तमान पृष्ठभूमि में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में छायावाद का प्रभाव ही दिखलायी पड़ता है, बस अन्तर है पुराने प्रतिमान को नये, सौन्दर्य बोध से गढ़ने का। प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी जी के अतिरिकत बहुत से कवियों, लेखकों ने 'छायावाद' को एक युग के रूप में स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई, प्रख्यात आलोचक प्रो0 नामवर सिंह अपनी 'पुस्तक' 'छायावाद' में प्रसाद को छायावाद का प्रतिनिधित्व कर्ता मानते हुए स्पष्ट लिखते है "साहित्य में छायावाद को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने में सभी छायावादी कवियों का योग समान नहीं है। निराला यदि भाव और अभिव्यंजना के नए–नए विविध पथ निकालने मे सबसे आगे रहे, तो पन्त सौन्दर्य, चमन और अभिव्यंजना शक्ति संवारने में अग्रणी रहे महादेवी ने प्रगति के विषेश क्षेत्र में सबसे अधिक कार्य किया, तो प्रसाद इन सभी कवियों की सफलताओं को पंजीकृत करने में सबसे अधिक सफल रहे, इसीलिए इनकी कामायनी 'छायावाद' का प्रतिनिधी काव्य है, प्रसाद ने नवोन्मेष सबसे कम है, पर छायावाद का पूरा प्रतिनिधित्व वही करते है।"

सम्पूर्ण छायावाद पर विचार किया जाये, तो साफ स्पष्ट होता है कि छायावाद हिन्दी साहित्य के इतिहास का वह युग है, जिसने सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति, परम्परा, स्वतन्त्रता आदि कई ऐसी विषेशताओं को आत्मसात किया, जिसकी जड़ों का प्रभाव आज भी हमे कुछ न कुछ नयी सोच के लिए प्रेरित करता है।

प्रेम प्राचीन से लेकर, माध्यकालीन और आधुनिक कवियों का मुख्य विषय रहा, किन्तु छायावादी कवियों ने प्रेम अभिव्यजना में रूढ़ि और परम्परा का विरोध करते हुए निजी प्रेम की अनुभूतियों का चित्रण प्रस्तुत किया, जो बिल्कुल नया प्रयोग था– महाकवि 'निराला' की ' प्रेयसी' की कुछ पंक्तियाँ इसकी गवाह है–

दोनो हम भिन्न वर्ण भिन्न जाति, भिन्न रूप भिन्न धर्म, भाव पर केवल अपनाव से, प्राणों से एक थे।'

छायावादी कवियों ने प्रकृति के सभी रूपों को अपने काव्य का आधार बनाया। प्रकृति को माध्यम बनाकर नारी सौन्दर्य की अभिव्यंजना को कवि प्रसाद और 'निराला' ने प्रचुर मात्रा में अपने काव्य में स्थान दिया है– उनके काव्य कही कुछ पंक्तियाँ इस सन्दर्भ में दृष्टव्य हैं–

बीती विभावरी जाग री/अंबर पनघट में डूबो रही तारा घट उषा नागरी अर्थात् हे प्रिय तू जाग! रात बीत चुकी है, आकाश रूपी पनघट पर उषा रूपी नारी तारे रूपी घट डुबो रही है।' दिवसावसान का समय मेघमय आसमान से उतर रही वह संध्या सुंदरी/परी सी–धीरे–धीरे–धीरे।'

छायावाद का समय काल–मुख्यतः काव्य साहित्य का काल खण्ड माना जाता है, पर प्रसाद छायावाद के स्थापनाकर्ता होने के साथ–साथ इस युग के दो विधाओं (काव्य और नाटक) दोनों के मुख्य सृजनकर्ता भी है, जहाँ कामायनी, आँसू, लहर, झरना काव्य कृतियाँ उन्हें महान कवि के रूप में रेखांकित करती है, वही अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी जैसी कालजयी नाट्य रचनायें, उन्हें हिन्दी साहित्य के इतिहास में नाटक सम्राट के रूप मे स्थापित करती है, प्रसाद जी ने दोनों विधाओं में बराबर लेखनी चलाई, पर छायावाद के स्वरूप को कभी खण्डित नहीं होने दिया। कविता की परिभाषा को भी उन्होंने अपने

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

नाटकों में उतारा है, उनके गीतों एवं काव्य रूपों में वह छायावाद की परम्परा से कभी पृथक नही दिखाई देती है। वह नाटक स्कन्दगुप्त में कविता की अभिव्यक्ति ऐसे प्रस्तुत करते हैं, जैसे वह स्वयं उसकी अभिव्यक्ति बनते है, वह ''कवित्व वह वर्णमय चिता है जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है। असत का सत से जड़ का चेतन से, ब्राह्म जगत से अन्तर जगत का सम्पर्क कौन कराती है, कविता ही ना'' छायावाद में अलौकिक सता के प्रति प्रेम की व्यंजना जो दिखलायी पड़ती है, वह नाटक और काव्य दोनों स्तरों में व्यापक पैमाने पर दिखलायी पड़ती है। महादेवी वर्मा ने उसी अलौकिक सता का निरूपण अपने विरह काव्यों में खूब व्यंजित किया है– **वह लिखती है।**

बिरह का युग आज दीखा मिलन के लघु पल सरीखा
दुःख सुख में कौन तीखा मैं न जानी और न सीखा।''

छायावाद के काव्य रचनाकार स्वच्छन्द विचारों के पोशक थे, वह सामाजिक बन्धनों एवं परम्परागत रूढ़ियों ने मुक्ति पाना चाहते थे, इसी कारण उनमें 'आत्माभिव्यक्ति'का भाव स्वयं पैदा हुआ, साथ ही साथ अज्ञात के प्रति जिज्ञासा का भाव भी उन्हें एक चेतना देता है इसी कारण 'प्रकृति' के कवि 'पन्त' जिज्ञासु भाव से बालक से पूछते है।

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि तूने कैसे पहचाना?''

इसी तरह वह नीरव निशा में चमकते तारे में स्वयं को निगूढ़ सता का एहसास दिलाते है अपने को स्वयं स्वकथन की प्रक्रिया में रख कर स्वयं मौन निमंत्रण देते हैं– वह लिखते हैं।

''विश्व के पलकों पर सुकुमार विचरते है, जब स्वप्न
अनजान न जाने नक्षत्रों से कौन निमंत्रण देता मुझको मौन।''

छायावादी रचनाकारों ने स्वकथन प्रयोग के माध्यम से गीत शैली का प्रयोग जो काव्य में किया, वह सचमुच कविता (छायावादी) के क्षेत्र में एक नया प्रयोग, एक नयी क्रांति जैसा था। कह सकते है कि काव्य की गीतात्मकता का रिदम अर्थात पैर्टन ही बदल गया। गीति शैली के सभी तत्व, संगीतात्मकता संक्षिप्तता, कोमलता, भावात्मकता को सभी समकालीन (छायावादी) कवियों ने हाथो–हाथ लिया और अपने काव्य में व्यंजित किया।

प्रतीकात्मकता का प्रयोग भी छायावाद रचना प्रक्रिया का प्रमुख संदर्भ रहा। प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी सभी छायावादी कवि इससे अछूते नहीं रहे, बीसवी सदी की 'कालजयी रचना' 'कामायनी' प्रतीकात्मक काव्य ही है, प्रसाद ने मनु, श्रद्धा, और इड़ा के चरित्र को मन, हृदय, बुद्धि के प्रतीक रूप में चित्रित किया, साथ ही साथ 'आँसू' में उनकी प्रतीकात्मकता का एक अलग रूप देखने को मिलता है– वह लिखते हैं–

चंचला स्नान कर आन चन्द्रिका पर्व में जैसे उस पावन
तन की शोभा आलोक मधुर है ऐसी।''

महाकवि निराला भी इससे पृथक नहीं रहे, उनकी कविता 'बादल राग' पूर्णतः प्रतीकात्मक कविता के रूप में छायावादी काव्य के इतिहास में रेखांकित है। इस संदर्भ में ' बादल राग' कविता की कुछ पंक्तियाँ साक्ष्य हैं–

'पार ले चल तू मुझको बहा, दिखा मुझ को भी निज
गर्जन–भैरव–संसार'

छायावादी कवियों ने अपने काव्य भाषा के द्वारा उसे हिन्दी काव्य इतिहास मे अलग पहचान दिलाइ। संस्कृत निष्ठ शब्दों का प्रयोग, कोमल कांत पदावली का प्रयोग, अर्थ विश्लेषण में सहजता जैसे प्रयोग से एक नया आधार दिया, किन्तु प्रसाद और निराला की ' काव्य भाषा अन्य छायावादी कवियों, रचनाकारों से बिल्कुल अलग, कह सकते हैं कि एक अलग तरह में नयापन लिए हुए दिखलाई पड़ती है। निराला के भाषा का रंग भावों क अनुकूल सहज रूप धारण कर लेता है, तत्सम शब्दों के साथ, ठेठ, देशज शब्दों का प्रयोग करने में वे बिल्कुल नहीं हिचकते हैं, महाकवि प्रसाद ही कुछ हद तक उनके समक्ष खड़े होते है, जबकि अन्य छायावादी कवियों में इसका अभाव है, अबे सुन बे गुलाब में 'निराला' का काव्यभाषिक प्रयोग छायावाद को भाषा (काव्य) के स्तर पर नई ऊँचाईंयाँ प्रदान करता है। जहाँ निराला ने छायावाद के कोमल मधुर भावों की अभिव्यक्ति के लिए तत्सम युक्त भाषा का प्रयोग किया तो दूसरी तरफ दलित रूप के चित्रण के लिए 'ओज पूर्ण भाषा' प्रयोग भी किया, 'जूही की कली' कविता की कुछ पंक्तियाँ इसकी साक्ष्य है।

विजन वन वल्लरि पर सोती थी, सुहाग भरी,
स्नेह–स्वप्न–मग्न, अमल–कोमल तनु–तरूणी जुही की
कली दृग, बंद किए शिथिल पत्रांक में जलदी–जलदी पैर
बढ़ाओं धोबी–पासी, चमार तेली/खोलेंगे अंधेरे का ताला
एक टाट बिछाओ पाठ पढ़ेगे।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*